कक्षा –एम.ए.हिंदी (द्वितीय सेमेस्टर)
विषय –प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य और उसका इतिहास
प्रश्नपत्र –प्रथम
कक्षा व्याख्यान शीर्षक –मीराबाई का संक्षिप्त परिचय व काव्यगत लक्षण
विभाग –भाषा अध्ययन केंद्र जी .वि .वि .ग्वालियर
शिक्षक –डॉ.निशी

मीराबाई का परिचय-

- मीराबाई का जन्म जोधपुर के कुड्को नामक स्थान पर सन 1503 में हुआ था ।
- मीराबाई का विवाह 1516 में राणासांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ ।
- 1527 में पति की मृत्यु के बाद साधुसंगति में आकर चित्तौड़ त्यागा और 1533 में ब्रजयात्रा हेतु निकल गयीं ।
- 1539 में तुलसीदास से मिलकर वे दवारिका जाकर भजन कीर्तन करने लगीं व रणछोड़जी के मंदिर में नृत्य करतीं और एक दिन उन्हीं में विलीन हो गईं ।

काव्यगत लक्षण

- आत्माभिव्यंजना candidate_type ---–कवि अपने –अपने अनुभक्ति भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने की चेष्टा करता है, जो मीराबाई के काव्य का प्रमुख लक्षण है ।
- संगीतात्मकता ---मीराबाई के काव्य में संगीतात्मकता काव्य (गीतिकाव्य) का प्राण तत्व सा प्रतीत होता है ।

- अनुभूति की प्रधानता –मीराबाई के पदों में भाव प्रवणता सर्वत्र दिखाई देती है ।
- भावों की एकता –प्रेम की पीर की मार्मिक अभिव्यक्ति गीति की हर पंक्ति में संगीत के उतर –चढ़ाव पर खरी उतरती है ।
- श्रंगार रस –संयोग व् वियोग श्रृंगार की दसों दशाओं का चित्रण किया गया है ।

- प्रेम में पूर्ण समर्पण
- ममता का आधिक्य
- प्रेम में विश्वास की प्रवलता
- प्रेम साधना में ह्रदय की पावनता
- भाषा –भाषा में राजस्थानी, ब्रज , गुजराती , पंजाबी का प्राधान्य , मात्रिक छंदों का प्रयोग , अलंकारों में –रूपक , उपमा , वीप्सा , आदि का प्रयोग ।

रचना संसार ----प्रमुख रचनाएँ

- गीत गोविन्द का टीका
- नरसी जी का मायरा
- फुटकल छंद
- राग सोरठा छंद
- राग गोविन्द
- मीरा की मल्हार
- मीराबाई की पदावली
- धन्यवाद